ISSN 2349-638x
Impact Factor 7.149

AAYUSHI INTERNATIONAL INTERDISCIPLINARY
RESEARCH JOURNAL
PEER REVIEW & INDEXED JOURNAL
Email id : aiirjpramod@gmail.com
www.aiirjournal.com

SPECIAL ISSUE No. 100

हिंदी साहित्य में संवैधानिक मूल्य

मुख्य संपादक
प्रा. प्रमोद तांदळे

अतिथि संपादक
डॉ.राम वाघ
प्राचार्य
कै.व्यंकटराव देशमुख महाविद्यालय, बाभळगाव

कार्यकारी संपादक
प्रो.डॉ.रणजीत जाधव
हिंदी विभागाध्यक्ष
कै.व्यंकटराव देशमुख महाविद्यालय, बाभळगाव

सह-संपादक
प्रा.डॉ.मा.ना.गायकवाड
हिंदी विभाग
कै.व्यंकटराव देशमुख महाविद्यालय, बाभळगाव

SPECIAL ISSUE PUBLISHED BY
AAYUSHI INTERNATIONAL INTERDISCIPLINARY
RESEARCH JOURNAL
Peer Review & Indexed Journal I Impact factor 7.149
Email id : aiirjpramod@gmail.com
www.aiirjournal.com
Mob.8999250451

Sr. No.	Name of the Author	Title of Paper	Page No.
16.	श्री. संतोष शिवराज पवार	हिंदी उपन्यास साहित्य में नव संवैधानिक मूल्य : शिक्षा एवं आर्थिक स्वावलंबन	60
17.	डॉ. अयुबखान गुलाबखान पठाण	मध्ययुगीन काव्य में संवैधानिक मुल्य (विशेष कवि संत कबीर)	63
18.	डॉ.सूर्यकांत शिंदे	सांप्रदायिक सौहार्द और मुंशी प्रेमचंद का कथा साहित्य	68
19.	डॉ.अशोक एम.पवार	हिन्दी की दलित कविता में स्वतंत्रता, समानता और भाईचारा विषयक चिंतन	72
20.	डी. बी. केंद्रे	राजेन्द्रयादव के कथा साहित्य में संवैधानिक मूल्य	76
21.	डॉ.धीरज जनार्धन व्हत्ते	राष्ट्रीय तथा सांस्कृतिक भावना का चित्रांकन - 'जय भारत'	79
22.	प्रा.डॉ. सादिकअली हबीबसाब शेख	गोदान में राष्ट्रीय एवं समतावादी चेतना	82
23.	प्रा. विद्या बाबूराव खाडे	मैत्रेयी पुष्पा के 'अल्मा कबुतरी ' में संवैधानिक मूल्य	85
24.	प्रा.डॉ.वीरश्री वशिष्ठजी आर्य	मध्यकालीन संत काव्य में संवैधानिक मूल्य	87
25.	डॉ. सुधीर गणेशराव वाघ	महानगरीय जीवन में बदलते मानव मूल्य उपन्यास 'तिसरा आदमी'	90
26.	प्रा. संतोष येरावार	सलाम आखरी उपन्यास में सामाजिक न्याय को तरसती वैश्या	95
27.	प्रा. डॉ. मोहन मुंजाभाऊ डमरे	अज्ञेय की कहानियों में संवैधानिक मूल्य	99
28.	डॉ.मजीद शेख	शिक्षा व्यवस्था में व्याप्त भ्रष्टाचार की पौराणिक नाट्याभिव्यक्ति : एक और द्रोणाचार्य	103
29.	एन.एस. भेंडेकर	जहीर कुरेशी की ग़ज़लें: धार्मिक संवेदना	108
30.	डॉ मुकुंद कवडे	धूमिल के काव्य में संवैधानिक मूल्यों का चित्रण	112

जहीर कुरेशी की ग़ज़लें: धार्मिक संवेदना

सहा.प्रा. एन.एस. भेंडेकर
कला, वाणिज्य व विज्ञान महाविद्यालय, गंगाखेड.

धर्म आदमी को जोड़ता हैं, तोडता नहीं। 'ऐष धर्मः सनातन' कहानी में जो बात रचनाकार ने रखी है, वह सत्य है। मुलतः कौनसे भी धर्म में इर्षा-द्वेष का पाठ नहीं पढ़ाया जाता। धर्म का महत्व हर युग और समय में अनन्य साधारण है। धर्म का ज्ञाता, समाज में शांती-सौहार्द के लिए हर युग और समय में प्रयासरत रहा यह बात हमारे अतीत से पता चलती है। समाज सुधारक, विद्ववान, धर्म के ज्ञाता पंडीत समाज में समानता, भाईचारा, प्रेम, सौहार्द के लिए प्रयासरत रहे हैं। किंतु समाज में कुछ अराजक प्रवृतियाँ धर्म का सहारा लेकर समाज में धार्मिक विद्ववेश फलाने में कई बार सफल हुई है। जिसके चलते समाज में अराजकता, अशांती का महौल बना हुआ दिखाई देता है। जाती-धर्म के नाम पर संवेदनशिल पहलुओं को समाज के सम्मुख इस प्रकार रखा जाता है कि समाज मन आहत होकर स्व-धर्मरक्षनार्थ रास्ते पर उतर कर विनाश का कारन बन जाता है।

वास्तविकतः समाज में धर्म क दो पहलु दिखाई देते हैं। एक वह धर्म जिसके अंतर्गत व्यक्ति, समाज एक विशिष्ट विचारधारा को अपनाते हुए जीवन यापन करता है और दुसरा वह 'धर्म' जो व्यक्ति के 'कर्म' से संबंधीत है। यह बात तो स्पष्ट है कि कर्माधारीत धर्म सर्वश्रेष्ठ है। हिंदु, मुस्लिम, सीख, इसाई आदि धार्मिक विचाराधाराओं को अपनाने वाले तथा अपने धर्म की अस्मीता को अबाधीत रखते हुए धर्म रक्षणारर्थ सदैव तत्पर रहनेवालों में संवेदनशिलाता का प्रभाव अधिक पाया जाता है। अतः समाज में कुछ प्रवृतियाँ संवेदनशिल बिंदुओं को अधार बनार समाज में धार्मिक विद्ववेश का माहौल निर्माण करने में तत्पर दिखाई देती है। ऐसी प्रवृतियों के कारण समाज में अशांती बनी रहती है।

वर्तमान में धर्म और राजनीति यह दोनों भी पहलु एक दुसरे से जुड़े दिखाई देते है। जिसके चलते राजनीति धर्म का उपयोग अपने लिए करती हुई दिखाई देती है। धार्मिक अस्थिरता के प्रमुख कारणों में राजनीति भी एक प्रमुख कारण है, जिसके चलते धार्मिक अस्थिरता कई बार निर्माण हुई है। राजनीतिक क्षेत्र में विशेषकर चुनाव के समय राजनीति में धर्म का एक अस्त्र के रुप में प्रयोग कर स्वार्थ साधने का प्रयास किया जाता है। जिसके चलते भारतीय समतामूलक समाज में आज भी धर्म तथा जाती के नाम पर चुनाव लड़ते हुए आसानी से देखे जा सकते हैं। परिणामतः धर्म निरपेक्षता का भाव लुप्त होकर समाज में धार्मिकता के आधार पर निर्माण वर्ग चुनावी मैदान में अपने अपने धर्म को लेकर धर्म का प्राबल्य अबाधीत रखने हेतु प्रयासरत रहते हैं। साहित्य के क्षेत्र में इन विभिन्न पहलुओं पर समय सापेक्षता तथा यथातथ्यता के धरातल पर प्रकाश डाला गया है।

साहित्य की दुनिया में विशेषतः ग़ज़ल के क्षेत्र में आधुनिक हिंदी ग़ज़ल को समृद्ध बनानेवाले ग़ज़ल के प्रमुख हस्ताक्षर जिन्होंने दुष्यंतकुमार की परंपरा को समृद्ध बनाते हुए पाठकों के मन-मंदिर में ग़ज़ल को स्थापित करने में अपना महत्वपूर्ण योग दिया, ऐसे प्रमुख ग़ज़लकार 'जहीर कुरेशी' ने समाज में व्याप्त विभिन्न पहलुओं जैसे सामाजिक, राजकिय, आर्थिक, वैश्विक, आधुनिक आदि के साथ धार्मिक परिवेश को भी समयसापेक्षता तथा यथातथ्यता के धरातल पर सहज, सरल भाषा में वाणी प्रदान की। समाज मन तथा समाज जीवन की अतल गहराईयों को वाणी प्रदान करने वाले ग़ज़लकार की ग़ज़लों में वर्णीत धार्मिक संवेदना को निम्न प्रकार देखा जा सकता हैं।

मूलतः मानव समाज में धर्म एक विचारधारा है। जिसे अपना कर मानव अपने जीवन की राह तय करता है। धर्म से संबंधीत कोई भी विचारधारा अन्याय-अत्याचार का समर्थन नहीं करती। अतः सामान्य रुप से काह जा सकता है कि मानव समाज में धर्म एक ऐसी विचारधारा है जो शांती, सौहार्द की राह प्रदान करती है। वैसे देखा जाये तो कोई भी धर्म बैर की सीख नहीं देता। वह सीख देता है, आपस में प्रेम, सद्भाव, सौहार्द और शांती की। इसी पर प्रकाश डालते हुए जहीर कुरेशी अपनी ग़ज़ल के एक शेर में कहते हैं,

"धर्म सिखाए बैर तो, उसको समझ अधर्म,
धर्म प्यार का रास्ता, धर्म शाँति का मर्म।"[1]

भारत यह बहुधर्मिय राष्ट्र है। जिसमें अनेक धर्मों तथा जाती-पाति के लोग एक साथ रहते है। हर धर्म तथा संप्रदाय के अपने-अपने नियम है। जिसका आचरण कर लोग उसी विचाराधाराको अपनाकर चलते हैं। धर्म के प्रति लोगों की आस्था, प्रेम के साथ-साथ धार्मिक कट्टरता भी हर धर्म में पाई जाती है। हर धर्म की नींव होती है उसके सद्विचार जो उसे चरम शिखर पर पहुँचाती है। किन्तु समय के साथ-साथ इनमें बदलाव भी होते है या कुछ बदलाव जानबुजकर किये जाते हैं। जो लोग अपनी सुविधानुरुप अर्थ लगाकर उसका आचारण में प्रयोग करते हैं वहीं कालांतरण में उस धर्म के नियम बन जाते हैं। धर्म के इस बदलाव को जहीर जी कुछ इस प्रकार अभिव्यक्त करते हैं,

"धार्मिक आस्था के नियम
हर सदी में निराले मिले"[2]

स्पष्ट है कि धार्मिक आस्था यह एक संवेदनशिल विषय है। इसके प्रति धर्म के अनुयायी हर समय सजग रहते हैं। किंतु कई बार अपनी सुविधानुरुप इन नियमों में जानबुझकर बदलाव किये जाते हैं, जो आग चलकर एक नियम का रुप ले लेते हैं।

मूलतः धर्म और राजनीति यह दोनों अलग-अलग क्षेत्र है। धर्म का कार्य है, समाज में सद्भावना, सदविचार, भाईचारा, प्रेम स्थपित करे। यह कार्य हमारे अतीत में तत्परता के साथ संपन्न हुआ दिखाई देता है। किंतु वर्तमान में धर्म के क्षेत्र में राजनीति का पदार्पण हुआ है तब से जो संत अपने सद्विचार से समाज जीवन को आलोकित करते रहे हैं, उनकी वह अमृत वाणी आज व्यर्थ लगती है। आज अनेक ऐसे संत है, जो राजनीतिक जीवन का अभिन्न अंग बन चुके हैं। इसी बात पर प्रकाश डालते हुए जहीर जी अपनी ग़ज़ल के एक शेर में संतो की बाणी पर प्रहार करते हुए कहते हैं,

"राजनैतिक हुई इसलिए,
व्यर्थ संतों की बानी लगे।"[3]

राजनीतिक लालसा के चलते आज अनेक संत राजनीति में सक्रिय दिखाई देते हैं। हम सभी जानते है कि राजनीति में सच कम और झुठ का सहारा अधिक लिया जाता है। जनता से केवल वादें किये जाते हैं और सत्य किसी कोने में पडा रहता है। आज इसी राजनीति में सक्रिय होने पर संतों की बानी व्यर्थ लगती है इसमें कोई दुहराय नहीं। संतों का यह दयित्व है कि, समाज को सही दिशा प्रदान करे, उपदेश प्रदान करे किन्तु जो संत अपनी जिम्मेंदारियों को निभाना नहीं जानता वह संत ग़ज़लकार की दृष्टि से कायर है। ग़ज़लकार जहीर कुरेशी के शब्दों में,

"जो जिम्मेदारियों से भाग आया,
मुझे वो सन्त कायर लग रहा है।"[4]

एक ओर ग़ज़लकार ने संतो का राजनीति के प्रति आकार्षण धर्म के क्षेत्र में बाधा के के रुप में प्रकट किया है तो दूसरी ओर संतों की जिम्मेदरियों पर प्रकाश डालते हुए जो संता अपनी जिम्मेदारी निभाने में सक्षम नही उन पर करारे प्रहार भी किये है।

संत-फ़किर समाज को सत्य की राह दिखाने वोले एक प्रमुख पथप्रदर्शक होते है। उनमें दया, शांती, अपनापा, प्रेम, शांती-संयम के भाव कुट-कुट कर भरे होते हैं। किंतु जीस संत-फकीर में ये भाव नहीं पाये जाते वह समाज को क्या नई राज प्रदान कर पायेंगे ? संतो में ही अगर संयम न हो तो धार्मिक टकराव की स्थिति में क्या समाज में शांती बनी रह पायेंगी ? संत-फ़किरों में नीहित क्षमा भाव के अभाव और उसके परिणामों को जहीर कुरेशी एक ग़ज़ल के एक शेर द्वारा इस प्रकार प्रकट करते हैं,

"संत-फ़कीरों में न हो, अगर क्षमा का भाव,
तो धर्मों के बीच में, होंगे ही टकराव।।"[5]

यहा पर जहीर कुरेशी ने संत-फकीरों की में नीहित क्षमाभाव के अभाव को लक्ष्य कर धार्मिक टकराव की होने के कारनों को प्रकाश में लाने का प्रयास किया है।

आज आधुनिकता के इस दौर में बाजारवादी युग ने हर किसी को अपनी ओर आकर्षित किया है। आज तो बाजर का स्वरुप पुरी तरह मुक्त बन चुका है। जिसमें हर कोई अपने आप को आजमा कर धनवृद्धि के प्रयास करता दिखाई देता है। इस मुक्त बाजार ने आम जनमानस को तो अपनी ओर आकर्षित किया ही है, साथ ही संत भी इसके प्रभाव से अछुते नहीं रहे। वे इस बाजार की होड़ में पुरी तरह उतर चुके हैं और ग्राहकों को अपनी ओर आकर्षित करने हेतु उनेक प्रकार के उत्पार बाजार में उतार चुके हैं। इसी बात पर प्रकाश डालते हुए ग़ज़लकार कहते हैं,

"संत भी मुक्त लगते नहीं
आजकल मुक्त-बाज़ार से"[6]

जहा पर संत और बाजार की बात की जाये तो वर्तमान में 'पतंजली' के विभिन्न प्रकार के उत्पादों का नाम प्रमुख रुप से लिया जा सकता है।

धार्मिक विद्ववेषता यह समाज को लगा एक रोग है। जिस समाज या संप्रदाय में धार्मिक विद्ववेष की चिंगारी फैलती है, वहाँ हमेशा अशांती का माहौल बना रहता है। नफरत की चिंगारी आदमी को आदमी नहीं रहने देती। परिणामतः आम जनमानस का जीवन नकमय बन जाता है। ऐसी ही प्रवृत्ति पर प्रहार करते हुय जहीर कुरेशी कहते हैं,

"जिस शहर को न भूख मार सकी,
लोग नफरत से मर रहे थे वहां!"[7]

नफरत आदिमी को अंधा बना देती है। जिस कारन वह अपना सद्सद्विवेक खो देता है। स्पष्ट है कि भूख से लड़ाई कर आदमी जैसे तैसे जिवित रह सकता है किंतु नफरत उसे भूख से कई गुना अधिक तेजी से समाप्त कर देती है। ग़ज़लकार संवेदना के धरातल पर स्पष्ट रुप से कहना चाहते है कि, नफ़रत को छोड कर प्रेम, सौहार्द तथा शांती का अपनाये। किंतु नफ़रत से ग्रसीत व्यक्ति हो या समाज पुरी तरह अंधा हो जाता है। जिसका कोई रुख नहीं होता। वह दिशाहीन पंछी की भाँती भटकता रहता है और अपनी चपेट में जो आये उसे समाप्त करने पर तुल जाता है। सांप्रदायिक विवादों के चलते लोग किस प्रकार पागल बन जाते हैं, इसे ग़ज़लकार ने कुछ इस प्रकार प्रकट किया है,

"आपने देखे नहीं दो 'संप्रदायों' के,
लोग हो जाते हैं जब पागल विवादो में!"[8]

वैसे देखा जाये तो मानव जीवन किसी युद्ध से कम नही। मानव को जीवन यापन करते समय अनेक प्रकार की कठिनाईयों को पार कर आगे कि ओर बढ़ना पडता है। ठिक इसी प्रकार धर्म-युद्ध की बात की जाये तो उसे जितने के लिए भी अनेक कठिन प्रसंगों से होकर गुजरना पढ़ता है। मूलतः सच्चाई की राह बहुत ही कठिन है, जिस पर चलना आसान नहीं होता। मानव जीवन का धर्म है कि व अपने कर्तव्य का निर्वहन ठिक से करे यकिनन कठिनाईयों के बावजूद अंत में जीत प्राप्त होगी। जिस प्रकार धर्म युद्ध में कौरव-पांडवों की बात की जाये तो पांडवों को अनेक कठिनाईयों के बाद विजय प्राप्त हुई थी। ठिक उसी प्रकार मानव जीवन भी किसी धर्म-युद्ध से कम नही। इसी बात पर प्रकाश डालते हुए जहीर कुरेशी अपनी ग़ज़ल के एक शेर में कहते हैं,

"ये ज़िन्दगी, क्या किसी धर्म-युद्ध से कम है
ये धर्म-युद्ध है - जारी था और जारी है"[9]

ग़ज़लकार जहीर कुरेशी ने यहाँ पर संवेदना के धरातल पर मानव जीवन को धर्म-युद्ध से जोड़कर मानव जीवन की कठिनाईयों को प्रकाश में लाने का प्रयास किया है। साथ ही ग़ज़लकार इस बात को भी स्पष्ट करते है कि, मानव जीवन की सार्थकता सत्य के कर्तव्य पथ पर आगे बढ़ने में ही ही। जो निरंतर जारी रहेगी।

संक्षेप में कहा जा सकता है कि, ग़ज़लकार जहीर कुरेशी आधुनिक हिंदी ग़ज़ल क्षेत्र के एक प्रमुख हस्ताक्षर थे। जिन्होंने अपनी ग़ज़लों द्वारा समाज के विभिन्न पहलुओं को संवेदना के धरातल पर अभिव्यक्त किया है। समाज, राजनीति, धर्म, अर्थ, विज्ञान, टेक्नॉलॉजी आदि कई क्षेत्र उनकी ग़ज़लों में उभरकर आये है। ग़ज़लकार ने धार्मिक परिवेश में व्याप्त अनेक पहलु जैसे समाज का आचरण, संतों का कर्तव्य-कर्म, लोगों की धर्म के प्रति दृष्टि, धार्मिक विद्ववेष, प्रेम, अपनापा, शांती, सौहार्द आदि कई पहलुओं को समयसापेक्षता तथा यर्थार्थ के धरातल पर अभिव्यक्ति प्रदान कर समाज को एक नई दिशा प्रदान करने का महत्वपूर्ण कार्य किया है।

संदर्भ-

1. दोहों से दोजा-ग़ज़लों तक- जहीर कुरेशी, पृ.57
2. पेड तनकर भी नहीं टूटा - जहीर कुरेशी, पृ. 57
3. भीड़ में सबसे अलग- जहीर कुरेशी, पृ. 17
4. बोलता है बीज भी - जहीर कुरेशी, पृ. 100
5. दोहों से दोजा-ग़ज़लों तक- जहीर कुरेशी, पृ. 89
6. पेड तनकर भी नहीं टूटा - जहीर कुरेशी, पृ. 31
7. चाँदनी का दुःख - जहीर कुरेशी, पृ. 82
8. चाँदनी का दुःख - जहीर कुरेशी, पृ. 102
9. समंदर ब्याहने आया नहीं है- जहीर कुरेशी, पृ. 71